KERALA SCHOOL KALOLSAVAM 2016-17

KANNUR - 2017 JANUARY 16-22

SCHOOL KALOLSAVAM PROGRAMME COMMITTEE 2017

Code No. 636

छोड़ने वाली कली है बच्ची

एक कलि खिलते समय पूछते हैं लोग
लड़का या लड़की ?
लड़का है तो बच्चा है अधिक खास
लड़की है तो बच्ची है जमीन के घास ।

देखा वह लोग बच्ची की मुसकुराहट चहरे को
हटाया चहरा लोग फिर बोला ।
यह क्या हुआ है ?

न माना वह लोग पुत्री को खुशी
न देखा आँखें उसी के कभी ।
बेचारी बच्ची किया क्या वह उस्से ?
खेल है सब कुछ ऊपरवाले भगवान की।

शिक्षा न दिया उसको अच्छा न दिया
न सहारा दिया न जिंदगी भी दिया ।
तो सूखा गया वह पेड़ सूखा रहा सदैव ।
फिर भी माँगा नहीं वह अपनी जिंदगी की खुशी।

सहपाया वह सभी दुख
न जीना वह कहीं सुख ।
न पूछा लोग कोई बात
न बोला वह कभी दुख ।

रात रात में रोया किंतु,
बात न समझा माता-पिता ।
न दिया उसको पुत्री के स्थान
न बताया पुत्री उनकी मन दुख ।

'गलत है जमाने में अभी भी समाजों में
फर्क वह ढूंढते हैं आँखों के नजरों से '।

करना है खतम हमें इसतरह फर्कों को
भरना है रुकना हमें मनुष्यों की कर्मों में
चलना है साथ हमें बच्ची की आजाद केलिए
करना है हल हमें मुश्किल समस्यों में ।

बनना है नयी संसार हमें
न फर्क के हस्ताक्षर से ।
जीना है उसमें हमें
आजाद पंखों के साथ हमें ।